आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां अंक : तीसरा जुलाई–2013

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

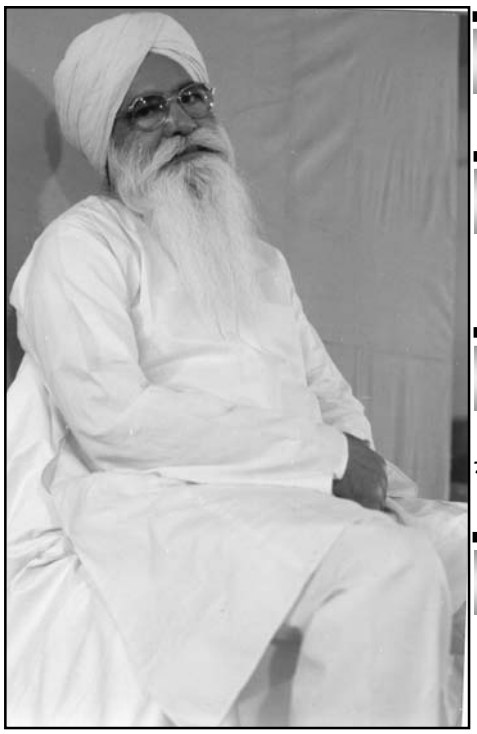

4 मेरे मनमोहन कृपाल
(एक शब्द)

5 मौत क्या है ?
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

13 इच्छाओं को त्यागें
(गुरु अर्जुनदेव जी की बानी)
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (मुम्बई)

25 सवाल–जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(साँपला)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन – 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 19 99

उपसम्पादक: नंदनी / माया रानी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया – 0 99 28 92 53 04

सहयोग : ज्योति सरदाना, रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2013 –136– **मूल्य – पाँच रुपये**

मेरे मनमोहन कृपाल तुझे याद करूं

मेरे मनमोहन, कृपाल तुझे याद करूं,
तेरी यादों में, रो–रो कर, इक फरियाद करूं, (2)
मैं इक फरियाद करूं,

1. क्यों दिया तूने, मुझे तन करके विछोड़ा, (2)
क्यों मुझे तूने, बीच दुनिया में छोड़ा, (2)
तेरे बिन मेरा, यहाँ कौन किसे बखान करूं,
तेरी यादों में .....

2. मैं तो नालायक, बेखबर दुनिया दीवानी से, (2)
मैं ना समझा, किसी और के समझाने से, (2)
समझूं भी कैसे, आ समझा यही पुकार करूं,
तेरी यादों में .....

3. मैं ना जानां, जानां ना इस दीवाने को, (2)
दुनियां तो दौड़ी, सिर्फ दुनियां के खजाने को, (2)
मैं तो बस रोया, कृपाल–कृपाल करूं,
तेरी यादों में .....

4. नासमझ था, कई दिनों बाद ही समझा, (2)
नहीं देगा, दर्श तन करके नाम में रमजा, (2)
याद करके तेरी यादें, रोज रोया करूं,
तेरी यादों में .....

5. बहुत मैं रोया, रोया तुझे याद करके, (2)
पर ना आया तूं, मेरे पास कभी तन करके, (2)
'अजायब' है तेरा, रहे तेरा यही अरदास करूं,
तेरी यादों में .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

मौत क्या है?

मुझे बचपन से ही हर समय महसूस होता था कि मेरा कुछ खो गया है। जब मेरा ध्यान इस तरफ गया उस समय मैं सात साल का था। हमारे घर के नजदीक पेड़ के नीचे एक बुजुर्ग बैठा करता था। जब मैं अपनी माता के साथ बाहर जाता तो उस बुजुर्ग को पेड़ के नीचे बैठे हुए देखता था। वह बहुत बूढ़ा था और आगे की तरफ झुककर बैठता था।

मैंने अपनी माता से पूछा कि यह बुजुर्ग इस तरह झुककर क्यों बैठता है? मेरी माता ने जवाब दिया, ''हर किसी की जिंदगी में ऐसा समय आता है; जब इन्सान बूढ़ा हो जाता है तो इस तरह झुककर बैठता है।'' मेरी माता की इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने सोचा! इन्सान हमेशा एक जैसा क्यों नहीं रहता? फिर मुझे अपने शरीर पर भी तरस आने लगा कि अगर हम अपने शरीर को लम्बे समय तक वैसा नहीं रख सकते तो इससे मोह करने का क्या फायदा?

मैंने एक साल तक उस बजुर्ग को उसी तरह बैठे हुए देखा। एक दिन मैं अपनी माता के साथ बाहर गया तो वह मुझे उस पेड़ के नीचे बैठा हुआ दिखाई नहीं दिया। मैंने अपनी माता से पूछा कि वह बुजुर्ग कहाँ चला गया है? मेरी माता ने मुझे बताया, ''वह बुजुर्ग मर गया है।'' मैंने अपनी माता से पूछा कि वह मरकर कहाँ गया है, क्या वह इस संसार में वापिस आ सकेगा? मेरी माता ने जवाब दिया, ''मुझे नहीं पता कि मरने के बाद इन्सान कहाँ जाता है। मरने के बाद कोई भी इस संसार में वापिस नहीं आता।''

मैंने अपने आपसे सवाल किया कि जब इन्सान यह नहीं जानता वह मौत के बाद कहाँ जाता है फिर इस संसार में वापिस आएगा या नहीं तो इन्सान इस संसार से लगाव क्यों रखता है?

मैं अभी छोटा ही था कि कुछ समय बाद मेरे एक दोस्त ने शरीर छोड़ दिया। वहाँ बहुत लोग रो रहे थे, शोक मना रहे थे। मैं यह जानना चाहता था कि उसे क्या हुआ? मुझे लगा कि रोना धोना सुनकर यह जरूर उठ जाएगा लेकिन वह नहीं उठा। जब लोग उसके मृतक शरीर को उठाकर श्मशान ले जा रहे थे तो मैंने अपनी माता से पूछा, ''यह कहाँ चला गया है?'' मेरी माता ने जवाब दिया, ''उसने शरीर छोड़ दिया है, अब उसके शरीर को जला दिया जाएगा ताकि वह वापिस न आ सके।''

मैं समझ गया कि मेरे माता-पिता भी नहीं जानते कि इन्सान मौत के बाद कहाँ जाता है। जिन्हें यह नहीं मालूम कि मौत के बाद इन्सान कहाँ जाता है; **मौत क्या है?** ये इसे सुलझाने में मेरी मदद कैसे करेंगे? मुझे बताया गया कि जो इस संसार में जन्म लेता है एक दिन उसे संसार छोड़कर जाना पड़ता है।

मेरी आत्मा परमात्मा से अलग थी। मुझे अपने अंत समय की चिन्ता थी इसलिए मैं दिन-रात रोया करता था कि मुझे इस समस्या के दर्द से छुटकारा मिल जाए।

मैं दिन-रात सोचा करता था कि **मौत क्या है?** मौत क्यों आती है? जब कोई मर जाता है तो क्या होता है? मौत के समय कौन मदद करने आता है? मैं इस मौत के रहस्य से दुःखी था। मैं हमेशा अकेला ही सोता और इस समस्या के बारे में गहराई से सोचता। इस समस्या की सोच में मेरी नींद उड़ गई।

मैं उस समय बच्चा था। मेरी माता मुझे मुलायम बिस्तर पर सुलाकर अपने कमरे में चली जाती तो मैं फर्श पर बोरी बिछाकर सो जाता। मेरी माता जब दो-तीन बजे मुझे देखने आती तो मैं उसके पैरों की आवाज सुनकर बिस्तर पर चला जाता। कई बार वह मुझे रंगे हाथों जमीन पर सोते हुए पकड़ लेती और नाराज होकर कहती, ''तुम पलंग पर क्यों नहीं सोते, हमने तुम्हारे लिए इतनी आरामदायक चीजें बनाई हैं अगर तुम इन चीजों का इस्तेमाल नहीं करोगे तो हम ये सब धन-सम्पत्ति किसके लिए इकट्ठी कर रहे हैं? अभी तुम्हारी भक्ति करने की उम्र नहीं, तुम बहुत छोटे हो।''

मैं सोच रहा था कि छोटी लकड़ियों को पहले आग लगती है। मैंने अपनी माता से कहा, ''हो सकता है कि मैं तुमसे पहले ही मर जाऊँ।'' मैं इस बात से भयभीत था कि कहीं मैं मौत के रहस्य को सुलझाने से पहले ही न मर जाऊँ।

मेरे माता-पिता परेशान थे कि मुझे क्या हो रहा है। उन्होंने सोचा कि मेरे साथ कोई गड़बड़ है। हो सकता है कि किसी भूत ने मुझे वश में कर लिया हो! उन्होंने ताबीज और कई ऐसी चीजों का इस्तेमाल किया। मैं सोचता था! वह क्या चीज है जो मुझसे बिछुड़ गई है। मेरे दिल में उस परमात्मा से मिलने की तमन्ना थी। मैं नहीं जानता था कि वह कौन है और कहाँ रहता है?

मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह अनदेखी ताकत मेरे सामने नहीं आ रही थी, मुझे बैचेन कर रही थी। मैंने उसे प्रकट नहीं किया था। मैं अपनी हालत अपनी माता को भी नहीं बता पा रहा था। मैं उनसे सिर्फ यही कहता,''मैं आपको बता नहीं सकता कि मेरा क्या खोया हुआ है, मुझे जिसकी याद सता रही है मैंने उसे नहीं देखा।''

जब मैं बहुत छोटा था तो मुझे अपने माता-पिता पर भरोसा था कि यही मेरे रक्षक हैं। ये जिंदगी के हर मोड़ पर मेरी रक्षा करेंगे। तब मैं यह नहीं जानता था कि एक दिन ये सब संसार छोड़ देंगे सिर्फ परमात्मा ही मेरा रक्षक हैं।

एक बार मैंने किसी के माता-पिता को शरीर छोड़ते हुए देखा। मेरे मन में यह विचार आया कि जब इस लड़के के माता-पिता शरीर छोड़ रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि मेरे माता-पिता भी शरीर छोड़ देंगे। मैं कैसे सोच लूं कि यही मेरे रक्षक हैं। हालांकि मेरे असली माता-पिता तो पहले ही शरीर छोड़ चुके थे। यह विचार मुझे पहले कभी नहीं आया क्योंकि मुझे उनका ज्यादा अहसास नहीं था। जो माता-पिता मेरा पालन-पोषण कर रहे हैं ये भी शरीर छोड़ देंगे; मैं इन्हें भी अपना असली रक्षक नहीं मान सकता।

एक बार मैं बच्चों के साथ खेल रहा था मेरे अंदर एक विचार आया जिसने मेरी जिंदगी को पलट दिया। यह मुझे एक सपने की तरह याद है। मैंने खेलते खेलते मिट्टी की दस-बारह ढ़ेरियाँ बनाई। ये ढ़ेरियाँ मैंने अपने भाई-बहन और रिश्तेदारों के नाम की बनाई। मैंने एक-एक ढ़ेरी से सवाल किया, ''क्या तुम मौत के समय मेरी रक्षा करोगे?'' मुझे अंदर से जवाब मिला कि हम खुद अपने जन्म-मरण में उलझे हैं तुम्हारी रक्षा कैसे कर सकते हैं?

मैंने निराश होकर एक-एक करके सब ढेरियाँ तोड़ दी। सिर्फ एक ढ़ेरी बची जो उस छुपी हुई ताकत की थी जिसकी तलाश मेरी आत्मा को थी। मैंने उस ताकत को देखा तो नहीं था लेकिन मुझे भरोसा था कि इस संसार में कोई ऐसी ताकत है जो मेरी रक्षा करेगी। जब मैंने उस ढ़ेरी से सवाल पूछा तो मेरे अंदर से यही जवाब आया, ''हाँ! मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।'' मैंने सोचा कि यह

वही परमात्मा है। मैंने उस ढ़ेरी के सामने सिर झुका दिया कि यही मेरा रक्षक है।

आमतौर पर माता-पिता यह ध्यान नहीं देते कि उनके बच्चे क्या खेल रहे हैं। अगर वे ध्यान दें कि बच्चा कुछ ऐसा खेल खेल रहा है जिसके बारे में माता-पिता को पता न चले तो वे जिज्ञासु हो जाते हैं और जानना चाहते हैं कि बच्चा क्या खेल रहा है? मेरे पिता जी मुझे यह सब करते हुए देख रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा, ''तुम क्या खेल खेल रहे हो? तुमने इतनी सारी ढ़ेरियाँ बनाई, एक ढ़ेरी को छोड़कर बाकी की ढ़ेरियाँ क्यों तोड़ दी? इस ढ़ेरी के सामने अपना सिर क्यों झुका रहे हो?''

मैंने अपने पिता जी को बताया कि मैं आपको अपना रक्षक समझता था। जब मैंने अमुक लड़के के माता-पिता को संसार छोड़ते देखा तो मैं समझ गया कि आप भी यह संसार छोड़ जाएंगे, आप मेरे रक्षक नहीं बन सकते। मैंने अपने भाई-बहनों, रिश्तेदारों और कौम के सभी लोगों के बारे में सोचा कि वे भी आपकी तरह एक दिन शरीर छोड़ जाएंगे।

ये मिट्टी की ढ़ेरियाँ जो मैंने बनाई थी ये मेरे भाई-बहनों और सांसारिक रिश्तेदारों की हैं। मैं इनसे सवाल कर रहा था कि क्या कोई मेरी रक्षा कर सकता है लेकिन मुझे किसी से भी साकारात्मक जवाब नहीं मिला, इसलिए मैंने इन्हें तोड़ दिया लेकिन यह जो एक ढ़ेरी बची है यह परमात्मा का प्रतीक है। मुझे अंदर से जवाब मिला है कि यह मेरा रक्षक है और मुझे मौत से बचाएगा।

मेरी ये बातें सुनकर मेरे पिता बहुत हैरान हुए। उन्हें अंदाजा ही नहीं था कि मेरी सोच इतनी गहरी और ऊँची हो सकती है। उन्होंने नाराज होकर मुझसे कहा, ''हम तुम्हारी इतनी अच्छी

देखभाल करते हैं, तुम्हें अच्छे से अच्छा खाना खिलाते हैं। हर तरह की अच्छी चीजें देते हैं फिर भी तुम कह रहे हो कि हम तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे।'' ये सब वह अपने दिल और दिमाग के मुताबिक कह रहे थे। वह नहीं जानते थे कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ।

मेरे पिता ने मुझसे कहा, ''प्यारे बेटे! अभी तुम बहुत छोटे हो ऐसा मत सोचो। मैंने तुम्हारे लिए सुंदर घर बनाया है, बहुत सम्पत्ति इकट्ठी की है। मैं तुम्हारी हर जरूरत का सामान तुम्हें दूँगा, तुम्हारी शादी करवाऊँगा और तुम्हें एक सुंदर सी बीवी भी मिलेगी।''

यह सब सुनकर मैंने जमीन पर थूक दिया और उनसे कहा, ''पिता जी! मैं आपसे अंदर के संसार के बारे में पूछ रहा हूँ। क्या आप मेरे साथ अंदर जा पाएंगे? क्या आप वहाँ मेरी मदद कर सकेंगे जहाँ संसार का कोई भी इन्सान मदद नहीं कर सकता? यह सांसारिक धन-दौलत, जमीन-जायदाद मेरे लिए थूक से ज्यादा कुछ भी नहीं है, मेरे लिए इनकी कोई कीमत नहीं है।''

फिर मैंने अपने पिता जी से पूछा कि क्या वह पत्नी हमेशा जिन्दा रहेगी? क्या वह मुझे मौत से बचा सकेगी? उन्होंने कहा,

''वह भी संसार छोड़ेगी, वह तुम्हें मौत से कैसे बचा सकती है।'' मैंने उनसे कहा, ''मैं शादी नहीं करना चाहता। मैं अब जान गया हूँ कि सिर्फ परमात्मा ही मुझे मौत से बचा सकता है।'' मेरे पिता जी को बहुत बुरा लगा लेकिन जो कुछ मैंने कहा वह सच था।

जब आपके अंदर ऐसे विचार आने लगते हैं तो आप सब दुनियावी सहारे छोड़ देते हैं और परमात्मा को पुकारते हैं तब उस परमात्मा से भी रहा नहीं जाता। वह परमात्मा आकर जरूर आपकी मदद करता है।

कबीर साहब फरमाते हैं, ''मैंने जब दुनिया में अपने आस-पास देखा तो कोई रिश्तेदार, जमीन-जायदाद मौत के समय मदद नहीं कर सकता। उस समय केवल परमात्मा ही मदद कर सकता है। वही परमात्मा मुझे इस तपती हुई दुनिया में सहारा दे सकता है। तब मैंने अपने दोनों हाथ फैलाकर उस परमात्मा को बुलाया तो उससे भी रहा नहीं गया और वह मुझे खींचकर ऊपर ले गया।''

उस दिन से मेरा इन दुनियावी चीजों से मोह नहीं रहा। त्याग और परमात्मा की तड़प मेरे अंदर घर कर गई। जब हमारे अंदर इस तरह के विचार आते हैं कि इस संसार में कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता; हमारा एकमात्र सहारा वह परमात्मा ही है तो हम उस पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं। तब वह हमें अपने चुनाव में लाता है और किसी ऐसे के पास भेजता है जो हमें परमात्मा की भक्ति करना सिखा सके।

मेरी माता मुझे बताया करती थी कि कोई छुपी हुई ताकत इन्सान के माथे पर उसका नसीब लिख देती है। जो उसके नसीब में लिखा होता है उसी के मुताबिक इन्सान रोता या खुश होता है।

मुझे बचपन से ही भजन लिखने की प्रेरणा मिली। मैंने उस समय परमात्मा की तड़प और याद में बहुत से भजन लिखे। मैंने गुरु के मिलने से पहले यह भजन लिखाः

लिखन वालया तूँ होके, दयाल लिख दे,

मैं बचपन से ही यह भजन गाता आया हूँ। वह सर्वशक्तिमान हर जगह मौजूद है। मैं सोचा करता था कि वे आत्माएं कितनी भाग्यशाली होंगी जिन्हें अपने जीवनकाल में ही जीवित महापुरुषों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मेरे पिता को मेरी बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने पंडित को बुलाया, पंडित ने सोने की कलम से मेरी जीभ पर ॐ लिख दिया। इसलिए मैंने अपने भजन में कहा है कि मेरी जीभ पर ॐ नहीं, मेरे गुरु का नाम लिखा जाना चाहिए। मुझे बचपन से ही धुन और ज्योति का अनुभव होता था। इसलिए मैंने अपने भजन में कहा हैः

मेरे कन्नां विच धुन दी आवाज लिख दे, मत्थे ते लिख दे जोत गुरु जी दी।

पवित्र आत्माएं बचपन से ही धुन सुन सकती हैं और रोशनी देख सकती हैं। ऐसी आत्माओं को जब तक पूर्ण गुरु नहीं मिलते तब तक धुन और रोशनी इन्हें ऊपर नहीं खींच सकती। मैंने अपने भजन में कहा हैः

मेरी अक्खां विच गुरु दा दीदार लिख दे।

मैं उस समय सोचा करता था कि जिन लोगों के पास पूरा गुरु है, वे लोग गुरु के जाने के बाद कैसे जीते हैं? इसलिए मैंने भजन के आखिर में किस्मत लिखने वाले के आगे प्रार्थना की हैः

इक ना लिखीं मेरे सतगुरु दा विछोड़ा,
भावें छुट जाए सारा संसार लिख दे।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

इच्छाओं को त्यागें

गुरु अर्जुनदेव जी की बानी

मुम्बई

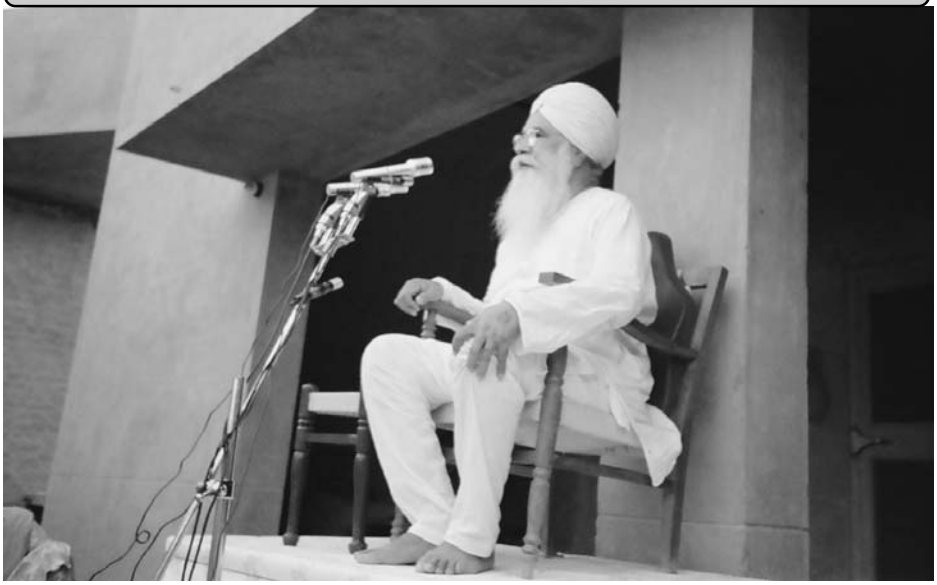

नैनों नींद पर दृस्ट विकार। स्त्रवण सोए सुण नींद विचार।।

परमात्मा ने इंसान को दुनिया का सबसे श्रेष्ठ जीव बनाकर भेजा है। हमें इंसानी जामें में रहते हुए बहुत देर हो गई है लेकिन हमने इस इंसानी जामें से पूरा फायदा नहीं उठाया। हम इस शरीर को बनाने-सँवारने में काफी समय लगा देते हैं। हमने अंदर जाकर देखना है कि परमात्मा ने अंदर क्या खूबसूरती रखी है? किस तरह अंदर खाने का अलग इंतजाम है, पानी का अलग इंतजाम है, खून अंदर दौरा कर रहा है और शरीर को ताकत दे रहा है। यह सब इंतजाम करने वाला कलाकार परमात्मा भी इस शरीर के अंदर बैठा है। हमने परमात्मा से मिलाप करके इस शरीर से जो काम लेना था हम वह काम नहीं कर रहे।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज इस शब्द में बता रहे हैं कि आमतौर पर हम इस शरीर से नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। जरूरत से ज्यादा नींद लेते हैं, आँखों से कामवासना वाली पिक्चरें देखते हैं। औरतें आदमियों की तरफ और आदमी औरतों की तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देखते हैं। इन आँखो की रोशनी परमात्मा को देखने के लिए थी लेकिन हम इसका गलत फायदा उठाते हैं, ऐसा करके हम अपनी आत्मा को धुंधला कर रहे हैं।

आज से चालीस-पचास साल पहले लोगों के इस तरह के विचार नहीं थे। मेरा जातिय तजुर्बा है कि आम नौजवान लड़के-लड़कियां इकट्ठे खेलते रहते थे। माता-पिता को लड़कियों का कोई फिक्र नहीं होता था क्योंकि सबके ख्याल नेक-पाक होते थे। माता-पिता धर्म की तरफ और नाम जपने की तरफ तवज्ञो रखते थे। उस समय आज की तरह काम-वासना भड़काने वाला प्रचार नहीं होता था। घरों में टेलिविजन नहीं थे, गंदी पिक्चरों वाले रसाले नहीं छपते थे। पच्चीस-तीस साल तक के लड़के-लड़कियों को काम-वासना का पता ही नहीं था। आज तीन-चार साल के बच्चों को इन हरकतों का ज्ञान है। माता-पिता का आला चरित्र न होने की वजह से यह हालत हो रही है।

आजकल टेलिविजन और अखबारों में आमतौर पर ताकत वाली दवाईयों का प्रचार किया जाता है। प्रचार करने वाले सलाह देते हैं अगर किसी ने गई हुई जवानी वापिस लेनी है तो वह हमारे पास पधारे। हमारा जातिय तजुर्बा है कि एक बार हाथ से गई हुई जवानी किसी भी दवाई से वापिस नहीं आ सकती।

महात्मा हमें बताते हैं कि जब हम बुरे कर्म करते हैं अपने आप पर कंट्रोल नहीं करते इन पाँचो दुश्मनों को अपने ऊपर हावी

कर लेते हैं फिर हमारी सेहत कमजोर हो जाती है। हमारा ख्याल ज्यादा फैल जाता है। जिस सुरत ने आसानी से 'शब्द' को पकड़ना था वह संघर्ष करने से भी ऊपर नहीं चढ़ती। हमने बचपन में जो गलतियां की हैं वह अब हमारे सामने पेश आ रही हैं।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''परमात्मा ने आपको आँखें संसारी काम चलाने के लिए मुफ्त दी हैं न कि विषय-विकारों में झाँकने के लिए दी हैं अगर आपने इन आँखों से मंद वासना झाँकनी है तो अपनी आँखे पैदा करें। परमात्मा ने आपको कान अंदर का राग सुनने के लिए दिए हैं अगर आप इन कानों से किसी की निन्दा या बुरे राग सुनते हैं तो आप अपने कान पैदा करें।''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपनी बानी में लिखते हैं कि जो आँखे किसी कमाई वाले महात्मा की तरफ नहीं देख रही और बुरी नजर से किसी औरत की तरफ देखती हैं वे आँखे निकाल देनी चाहिए। जो कान परमात्मा का राग नहीं सुनते वे कान बंद कर देने चाहिए। आप कहते हैंः

पर त्रिया रुप न पेखे नेत्र, साध की टहल सन्त संग हेत।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आपको बुराई की तरफ प्रेरित करते हैं। आपने परमार्थ में कामयाब होना है तो इन्हें छोड़ दें। मेरे पास बहुत से जोड़े आ जाते हैं जो कहते हैं कि हम परमार्थ में शादी करवाना चाहते हैं, हम ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत करेंगे। मैं हँसकर कहता हूँ कि हम आपका स्वागत करेंगे लेकिन जब वे दो-तीन साल बाद मिलते हैं तो उनके पास कई बच्चे होते हैं फिर उन्हें वह वक्त याद भी दिलाते हैं कि आपने क्या वायदा किया था?

हम कह देते हैं कि हम काम की आग से बच जाएंगे लेकिन इस आग से बचना बहुत मुश्किल है। कोई पहुँचा हुआ साधु ही इस आग से बच सकता है ऐसा नहीं कि इस आग से कोई नहीं बचा। ऋषि-मुनि, सन्त-महात्मा 'शब्द-नाम' की कमाई करके इस आग से बचे। मैं बताया करता हूँ कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी में है। जब हम त्रिकुटी से ऊपर चले जाते हैं फिर ये हमारे ऊपर हमला नहीं करते बल्कि हमारे बस में आ जाते हैं। हम जब तक नीचे हैं अगर हम दम मारते हैं तो यह गलत साबित हो जाता है। ये हमारे साथ मजाक करते रहते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं।
जरा सी नींद गफलत में झटपट गठड़ी उठाते हैं।

आपकी देह में पाँच डाकू छिपे हुए हैं ये सोए हुए को जगा देते हैं अगर आप इनसे अपना घर बचाना चाहते हैं तो अपने घर के अंदर पहरा लगाकर रखें अगर घर में लैम्प जलता है और पहरेदार डंडा खड़का रहा है तो चोर उस घर के अंदर जाने की हिम्मत नहीं करते। चोर जानता है कि मैं पकड़ा जाऊँगा, ये मुझे पुलिस के हवाले कर देगें। इसी तरह अगर हम अपने अंदर 'शब्द-नाम' की ज्योत जलाएंगे प्रकाश में चले जाएंगे तो ये चोर हिम्मत नहीं कर सकते उन्हें पता है अगर हम यहाँ गए तो काबू आ जाएंगे।

रसना सोई लोभ मीठै साद। मन सोया माया बिसमाद।

जुबान इन्द्री हमें अच्छे-अच्छे खानों पर ले जाती है। जब हम मीठे खानों या माँस को जुबान पर रखते हैं तब तक ही इनका स्वाद है जब ये जुबान से नीचे चले जाते हैं तो साग सब्जी मीट भी उसी तरह का है। यह जुबान - इन्द्री दरगाह में जाकर जीव के खिलाफ हो जाती है। दरगाह में कहती है कि यह मेरे ऊपर मीट शराब रखकर खाता-पीता रहा है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''ये सब इन्द्रियां धर्मराज के पास पहुँचकर इस जीव के खिलाफ हो जाती हैं। जीव जिन इन्द्रियों के पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद करता है वही इन्द्रियां इसकी दुश्मन बन जाती हैं।''

एक बार महाराज कृपाल मेरे आश्रम में बैठे थे। एक रईस आदमी महाराज जी से बातें करने लगा। मायाधारी लोग सन्तों की कद्र कम ही करते हैं क्योंकि उन्हें माया का नशा होता है। महाराज जी ने उससे पूछा, ''क्यों भाई! मीट, शराब से बचा है?'' उसने कहा अगर मैं शराब न पीऊँ तो मुझे नींद नहीं आती, मीट न खाऊँ

तो सेहत अच्छी नहीं रहती। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''सोचकर देख! अगर तुझे किसी पशु-पक्षी के जामें में भेज दिया तो वहाँ तुझे मीट, शराब कुछ भी नहीं मिलेगा। वहाँ तुझे खाने के लिए पत-पराल ही मिलेगा जो आज हम जानवरों को खाते हुए देखते हैं। क्या मौत तेरे अपने बस में है? क्या तू दोबारा इंसान बन जाएगा?'' यह सुनकर वह लाजवाब हो गया।

महाराज कृपाल के चोला छोड़ने के चार साल बाद उसका आखिरी वक्त बहुत दुःख भरा था। डाक्टरों ने उसके मुँह से खाना-दाना भी बंद कर दिया, उसके गले में छेद करके खाना पानी दिया जाता था। उससे कहा गया अगर तू शराब के नजदीक भी गया तो हम तेरा ईलाज नहीं करेंगे। मेरी उससे अच्छी जान पहचान थी वह गाँव में पड़ोसी था। जब मैं उससे मिलने के लिए गया तो उसने मुझसे कहा कि मुझे महाराज कृपाल की शिक्षा अच्छी तरह याद है वह बोल नहीं सकता था उसने ये सब कुछ लिखकर बताया। क्या मुझे नाम मिल सकता है? मैंने उसे चारपाई पर ही 'नाम' दिया।

सोचकर देखें! कई बार जीते जी हमारा शरीर जवाब दे जाता है। हम जिन चीजों से सेहत बनाते हैं हम उन चीजों को इस शरीर में नहीं डाल सकते। फिर हम पछताते हैं तब क्या बनता है?

हम अपने खान-पान पर तवज़ो नहीं देते। हमारे अंदर भरोसा नहीं इसलिए शराब भी पी लेते हैं मीट और अंडे की बनी हुई चीजें खाकर कहते हैं कि हमसे गलती हो गई अगर आपके अंदर भरोसा और प्यार हो तो आप इन चीज़ों के लिए सोच भी नहीं सकते।

महाराज सावन सिंह के एक नामलेवा को किसी ने जबरदस्ती माँस खिलाना चाहा। महाराज सावन सिंह जी ने रात को उसके

घर जाकर उसके मुँह में कीड़े डालकर डंडे से दबाकर कहा, ''आज तुझे किसी को जबरदस्ती माँस खिलाने का मजा चखा देते हैं।'' वह रोया चिल्लाया कि मैं फिर ऐसा नहीं करूंगा। अगर आपको भरोसा है, कोई आपके साथ जबरदस्ती करता है तो आपका गुरु आपकी रखवाली करेगा; गुरु बेइंसाफ नहीं।

पिछले दिनों में हमारा एक सतसंगी पंजाब गया। कुछ लोगों ने मिलकर उसे जबरदस्ती शराब पिलानी चाही कि देखे! इसका गुरु क्या करता है? अगर गुरु में कोई ताकत है तो वह आज अपनी ताकत दिखाएगा। वे लोग जब उसके मुँह में शराब डालने लगे तो उनकी बोतल ही टूट गई। उन तीनों ने कसम खाई और 16 पी.एस. आकर 'नामदान' ले गए कि हमें तसल्ली हो गई है कि गुरु किस तरह रक्षा करता है। जीभ के बारे में महात्मा बताते हैं:

निक्की जेही जीभ बड़ी चतुर कहौंदी ऐ।
बत्ती दंद ऐसदे दुश्मन बचकर किवें दिखौंदी ऐ।

यह जीभ बड़ी चालाक है। यह जीभ बत्तीस दुश्मन दाँतो के काबू में भी नहीं आती। जो आदमी जीभ के चसके में पड़ जाता है उसे कभी शान्ति और तृप्ति नहीं। यह जीभ उसे सारा दिन परेशान रखती है कि यह खाना चाहिए, वह खाना चाहिए।

मैं अपने घर का वाक्या बताया करता हूँ कि मेरा पिता बहुत अच्छा खाना खाने का स्वादु था। मेरी माता खाना बनाने में बहुत माहिर थी। वह मेरे पिता के लिए कई तरह के अच्छे-अच्छे खाने बनाती लेकिन मैंने अपने पिता को कभी खुश होते हुए नहीं देखा था। मेरी माता उसके आगे खाना नहीं परोस सकती थी। मेरी बहनें भी डर के मारे उसे खाना देने नहीं जाती थी। हमेशा मुझे ही भेजा जाता था कि तू खाना लेकर जा। एक बार की बात है मैंने अपने

पिता के सामने खाना लाकर रखा तो उन्होंने चम्मच से एक सब्जी को मुँह में डाला, सब्जी में नमक कम लगा तो उन्होंने थाली को उठाकर फैंक दिया और कहने लगा, ''इसमें नमक ही नहीं डाला।'' मैं बचपन से ही गुस्से का आदी नहीं था। मैंने हँसकर कहा, ''अब तो नमक ठीक हो गया!''

जो आदमी जीभ के चस्के लगाता है आप उसे जितने मर्जी अच्छे-अच्छे खाने दे दें उसे कभी भी तृप्ति नहीं होगी। मेरी माता कहती, ''भाई! तू भी खाने में कोई नुख्स निकाल दिया कर।'' मैं हँसकर कहता कि घर में एक ही ठीक नहीं आता अगर दोनों ही ऐसे हो गए तो तेरा जीना दूभर हो जाएगा। मेरी आज भी यही आदत है जब मेरे लिए खाना लाते हैं तो मैं परमात्मा का ध्यान करके खा लेता हूँ। मुझे ज्यादा सब्जियां या बार-बार कुछ खाने की आदत नहीं। बचपन से ही मेरा अपनी जीभ पर कंट्रोल हैं।

इस गृह मह कोई जागत रहै। साबत वस्त ओह अपनी लहै।

इस घर का मालिक सोया हुआ है तो पाँचो जानी दुश्मन इस घर को लूट लेते हैं, जब घर का मालिक जाग जाता है अपनी आई पर आ जाता है और इनकी मौजूदगी को बर्दाश्त नहीं करता तो ये एक-एक करके भाग जाते हैं। करोड़ो में कोई एक आध ही है जो जागता है, गुरु ने उसे जो अमानत दी होती है वह उस अमानत को गुरु के आगे ले जाकर रख देता है। उस अमानत को चोर चुरा नहीं सकता ठग लूट नहीं सकता।

सगल सहेली अपने रस माती। गृह अपने की खबर न जाती।।

हमने जिन सहेलियों इन्द्रियों के साथ प्यार लगाया हुआ है हम उनका हुक्म मोड़ने के लिए तैयार नहीं। ये अपने-अपने रस के

लिए ही हमसे काम लेती हैं। जब काम इन्द्री, जुबान इन्द्री का रस पूरा हो जाता है फिर कौन किसको पूछता है? याद रखो! ये इन्द्रियां काल पावर और मन की फौजें हैं। ये आत्मा को गुमराह करने के लिए सातो पहर हमारे पीछे लगी रहती हैं ताकि आत्मा सतलोक न पहुँच सके। मन बदमाश है यह प्रेरित करके हमसे पाप करवाता है बाद में बता देता है कि ये ऐब तूने किया है फिर पछताने से क्या बनता है? स्वामी जी महाराज कहते हैंः

आगे पाछे बहो पछताऊँ समा पड़े पर होवत चोरा।

मुसनहार पंच बटवारे। सूने नगर परे ठगहारे।

महात्मा रविदास जी कहते हैं, ''इंसान के अंदर पाँच डाकू हैं, जिनके अंदर एक है वे नहीं बच सके। मछली के अंदर जीभ का चस्का होता है। शिकारी लोग कुंडी में गोश्त लगाकर पानी में डाल देते हैं मछली सब्र नहीं करती कुंडी को गले में फँसा लेती है। शिकारी मछली को बाहर निकाल लेते हैं। एक जीभ के चस्के की वजह से वह हांडियों में चढ़ती है कीमा-कीमा होती है। आप देख लें! एक विषय ने उसकी जान ले ली।''

भँवरे को सूंघने का विषय होता है। वह फूल पर जाकर इतना मस्त हो जाता है कि अपने आपको भूल जाता है। शाम को फूल बंद हो जाता है, भँवरा सारी रात फूल में कैद रहता है और फूल के अंदर ही दम तोड़कर खत्म हो जाता है।

हाथी एक ताकतवर जानवर है। जिन लोगों ने हाथी को पकड़ना होता है वे बहुत बड़ा गड्ढा खोदकर उसके ऊपर मामूली सी छत डाल देते हैं। छत के ऊपर कागज की हथनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी में काम का वेग होता है वह सच्ची हथनी समझकर आता

है तो गड्ढे में गिर जाता है। वे लोग हाथी को खाने के लिए कुछ नहीं देते। हाथी भूख-प्यास से कमजोर हो जाता है। महावत अंकुश मार-मारकर उसे पकड़ लेते हैं। हाथी बहुत ताकतवर जानवर था लेकिन काम की इन्द्री ने किस तरह उसकी मिट्टी पलीत की, वह इंसानों को उठाता फिरता है। रविदास जी कहते हैंः

मृग मीन भृंग कुंचर एक दोख विनास, पांच दोख असाध जामे ताकी केतक आस।

इंसान में पाँच विषय हैं यह कैसे बच सकता है? इंसान गुरु के 'शब्द-नाम' की कमाई करके ही बच सकता है।

उन ते राखै बाप ना माई। उन ते राखै मीत न भाई।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमें इन पाँच डाकुओं से माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त और धन-दौलत भी नहीं बचा सकते। हमारे माता-पिता, बहन-भाई, यार-दोस्त खुद इस बीमारी से ग्रसित हैं ये हमें कैसे बचा सकते हैं?''

दरब सिआणप न ओय रहते। साध संग ओय दुस्ट वस होते।।

आप प्यार से कहते हैं, ''ये पाँचों डाकु चतुराई या दौलत खर्च करने से भी बस में नहीं आते। ये किसी महात्मा की शरण में जाकर ही बस में आते हैं। महात्मा हमें जो बताते हैं उस पर अमल करके इन्हें बस में करें, **इच्छाओं को त्यागें**।''

कर किरपा मोहे सारिंगपाण। संतन धूर सरब निधान।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हुए कहते हैं, ''ये पाँचों बड़े दुष्ट हैं। ये किसी तरह बस में नहीं आते। ये साधु की संगत में जाने से ही बस में आते हैं। हे परमात्मा!

तू दया-मेहर कर मुझे किसी कमाई वाले सन्त की धूड़ी दे, मैं तृप्त हो जाऊँ और तेरी भक्ति कर सकूँ।'' कबीर साहब कहते हैंः

यम का ठेंगा बुरा है ओह नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया तिन्हू लिया बचाए।

तुलसी साहब कहते हैंः

सन्त मिलया ये सब टले काल जाल जम चोट।
सीस नवायां गिर पऐ सिर पापां की पोट।

साबत पूंजी सतगुर संग। नानक जागै पारब्रह्म कै रंग।।
सो जागै जिस प्रभ किरपाल। एह पूंजी साबत धन माल।।

जिन पर परमात्मा दयालु होता है मेहर करता है वे इस शरीर में बैठकर जागते हैं। हम सोचते हैं शायद! गुरु परमात्मा दयालु नहीं। वह तो दयालु है और दया करने के लिए ही आता है लेकिन हम उस दया को प्राप्त नहीं करते। रोज-रोज भजन-सिमरन करना दया को प्राप्त करने का साधन है। हम रोज-रोज साधन नहीं करते ऐसे ही जुबानी कहते हैं दया करो! दया करो!

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो काम जीव के जिम्में है वह काम जीव ने ही करना है। यह तो वह बात हुईः

लद भी दे लदेंदा भी दे लद्दण वाला भी घरो दे।

सन्तों ने दया करके अपने घर का भेद दे दिया। हमें 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ दिया। पवित्र जिंदगी बिताने के लिए समझा दिया। अब हमारा फर्ज है कि हम **इच्छाओं को त्यागें** अपने जीवन को सुधारें और अपने आपको उनके हवाले करें।

***

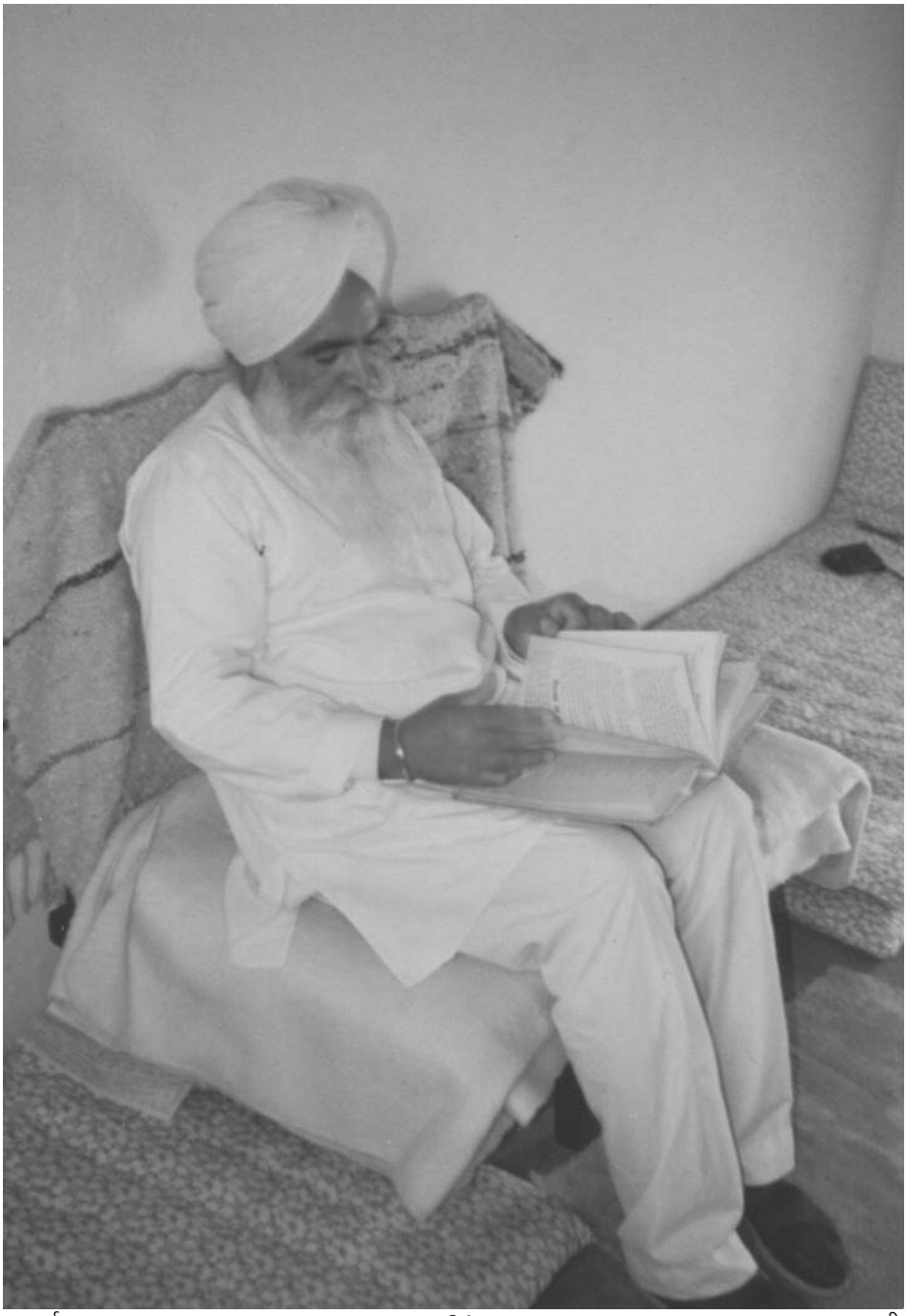

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

साँपला

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया। अभी प्रेमियों ने जो शब्द गाया है वह बहुत ही प्यारा और दर्दभरा है। गुरु को अपनी गलतियां बताने का यह सबसे अच्छा तरीका है।

बहुत से प्रेमी मुझे दर्शनों में मिलने के लिए आते हैं, वे बताते हैं कि हम गुरु का स्वरूप तो देखते हैं लेकिन गुरु हमारे साथ बातचीत नहीं करता। शिष्य में जोश पैदा करने के लिए ऐसा होता है कि वह अपनी गलतियां और कमियां देखनी शुरू कर दे।

एक प्रेमीः *आप कहते हैं कि 'नामदान' के समय जो जोश हममे होता है अगर हम वही जोश बनाए रखें तो हम आसानी से अपनी मंजिल तक पहुँच जाएंगे। अगर हमने वह जोश खो दिया है तो हम वह जोश किस तरह बनाकर रख सकते हैं?*

बाबा जीः हम जानते हैं अगर हमने इस दुनियां में कुछ हासिल करना है तो हमें मेहनत करनी पड़ेगी, बिना मेहनत किए हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकते। गुरु को पाने के लिए भी जोश और भजन-सिमरन जरूरी है।

जब बच्चा पहली बार स्कूल जाता है तो उसे स्कूल जाना अच्छा लगता है उसमें जोश होता है। बच्चा टीचर का कहना माने टीचर का दिया हुआ पाठ याद करे तो वह परिक्षा में आसानी से अच्छे नंबर लेकर पास हो जाएगा अगर बच्चा अपना पाठ याद नहीं करता तो क्या वह परिक्षा में पास होने की उम्मीद कर सकता है?

सोना जमीन खोदकर ही निकाला जाता है। मोती प्राप्त करने के लिए गहरे समुद्र में डुबकी लगानी पड़ती है इसी तरह सतगुरु का प्यार समुद्र है अगर हम नाम का मोती निकालना चाहते हैं तो हमें समुद्र के अंदर डुबकी लगानी पड़ेगी।

नामदान के समय हमें बताया जाता है कि हमें हर रोज कम से कम ढ़ाई घंटे भजन करना चाहिए अगर हम इससे ज्यादा भजन करते हैं तो और भी ज्यादा अच्छा है। नामदान के समय हमें और भी कुछ कायदे-कानून बताए जाते हैं कि हमने किन बातों का परहेज करना है। जिस तरह डाक्टर हमें दवाई के साथ परहेज भी बताता है कि दवाई के साथ परहेज करना जरूरी है।

प्यारेयो! हमें आँख, कान और बाकी सब इन्द्रियों को काबू में करना है। मैंने आपको अपने बारे में बताया है कि मैं शुरू से ही बाजारों में नहीं गया। बिना जरूरत के इधर-उधर नहीं घूमा अभी भी मेरी यही आदत है। मैं अपने कपड़े खरीदने भी खुद नहीं जाता। मैं यह भी बताया करता हूँ कि मैं कई-कई दिन तक खाना नहीं खाता था इसलिए मैंने खाने का स्वाद खो दिया है।

ऐसे भी बहुत से प्रेमी हैं जिन्होंने मेरे साथ पचास-साठ साल बिताए हैं। उन्हें मेरे जीवन के बारे में और मुझे उनके जीवन के बारे में पता है। मैं उनसे कहता हूँ कि तुम लोग मेरे जीवन के बारे में बताओ या फिर मैं तुम्हारे बारे में बताऊँगा कि तुमने अपने जीवन में क्या किया है? क्या कभी किसी ने मुझे सिनेमा में, मेले में या और किसी मनोरंजन वाली जगह में देखा है? या मुझे कभी खाने की निन्दा करते हुए देखा है? संगत में कोई ऐसा नहीं मिलेगा जो मेरे बारे में कह सके। पप्पू को मेरे साथ बीस साल हो गए है अगर पप्पू इजाजत दे तो मैं बहुत कुछ कह सकता हूँ।

प्यारेयो! अगर आप इन सब बातों को जोश और भक्ति के साथ मानेंगे तो आपको याद आएगा और आप महसूस करेंगे कि आपकी मंजिल कहाँ है जिसे आपने हासिल करना है। अगर अभी आप अंदर गुरु से नहीं मिले तो भी गुरु आपकी मदद कर रहा है आपकी रक्षा कर रहा है।

महाराज सावन सिंह अक्सर कहा करते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल बंधा है घर के मालिक को उसका फिक्र है कि उसे कब खाना देना है कब धूप से छाँव में करना है। घर का मालिक उस जानवर की सारी जरूरत पूरी करता है।'' इसी तरह अगर आपके घर में कोई नौकर काम करता है तो आपको उसका फिक्र है कि उसे कब खाना देना है कब तनख्वाह देनी है। क्या आप सोचते हैं कि परमात्मा हमारी तरफ से बेपरवाह है? आप भजन गाते हैंः

जब भी याद किया भक्तों ने, नंगे पैरो दौड़ा आया,
सदा दीन को गले लगाया, सदा दिया दुर्बल को सहारा,
खैर नाम की पाओ कृपाल जी, अजायब रहा बोल,
प्रेम से गुरु गुरु.....

मेरी भी यही हालत है। मैं बचपन से ही आपको याद कर रहा था। मैं सारा जीवन आपका इंतजार करता रहा। आप अपने आप ही मेरे पास आए और आपने मुझे गले लगाया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु किसी का इम्तिहान न ले।'' आपके पास बहुत अच्छा घर हो, पचास एकड़ जमीन हो, सोचकर देखें! जिसे आप पहले न जानते हों जो अपनी मुलाकात के पहले दिन ही आपको हुक्म दे दे कि ये सब छोड़कर यहाँ से चले जाओ। उस समय मैं अपनी पगड़ी सिर पर रखने लगा तो आपने कहा कि मैंने तुम्हें पगड़ी उठाने के लिए नहीं कहा।

सोचकर देखें! ये सब करना कितना मुश्किल हुआ होगा जबकि आप उस इंसान को पहले से न जानते हों।

फिर आपने मुझे 16 पी.एस. जाने का हुक्म दे दिया। उस समय मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा था लेकिन उस समय मुझे महाराज सावन सिंह जी की बात याद आई। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब कुम्हार घड़ा बनाता है तो घड़े के अंदर भी हाथ रखता है।'' तब मैंने सोचा अब यह सब उसके ऊपर है वह चाहे मुझे धूप में रखे चाहे छाँव में रखे। अब वह जिम्मेवार है वह जो मुझसे करने को कह रहा है मुझे वही करना चाहिए।

आज भी मेरे अंदर उसकी याद के लिए वही जोश है जो शुरूआत में था। इसलिए मुझे आपके साथ उसकी याद में बैठना अच्छा लगता है। मैं उम्मीद करता हूँ मेरे अंदर जोश देखकर आपके अंदर भी जोश पैदा हो। आप जानते हैं कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। खरबूजा एक फल है परमात्मा ने खरबूजे में कोई दिमाग नहीं डाला लेकिन संगत के कारण एक खरबूजा दूसरे खरबूजे को देखकर रंग बदल लेता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि कम से कम मुझे देखकर आप लोगों के अंदर उतना ही ज्यादा जोश पैदा हो।

अगर हम साँस-साँस के साथ गुरु को याद करते हैं तो गुरु को भी कुछ देना पड़ता है। गुरु सतनाम का फल लेकर आते हैं और वे हमें वही देना चाहते हैं। परमेश्वर और ईश्वर का इस काम में कोई दखल नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहले लग्गी, तैसी निबहे ओड़।
अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला हुआ नहीं कहते।'' हमें अपना जोश नहीं खोना चाहिए। ज्यादा जोश के साथ भक्ति करते हुए फिर से नया जीवन शुरू करना चाहिए। प्यारेयो! मेहनत के चोर न बनें। जो मेहनत करते हैं उन्हें सफलता जरूर मिलती है।

एक प्रेमी: *महाराज कृपाल ने ध्यान केन्द्रित करने पर विशेष जोर दिया है। आपने कहा है, ''मन की जुबान से धीरे-धीरे सिमरन करें। अपने सामने के अंधकार के बिल्कुल बीच में ध्यान से देखें धीरे-धीरे अंधकार कम होता जाएगा आपको प्रकाश दिखेगा उसके बीचोबीच ध्यान से देखें वह फट जाएगा, आपको आगे ऊपर का रास्ता दिखेगा।'' मेरा सवाल है, ''ध्यान का सिमरन के साथ क्या ताल्लुक है? मुझे ध्यान केन्द्रित करने में बहुत मुश्किल होती है?''*

बाबा जी: कल सतसंग में मैंने आपके बहुत से सवालों का जवाब दिया था। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिन्हें थोड़े शब्दों में समझना है वे मेरे पास आएं, जिन्हें ज्यादा विस्तार से समझना है वे कृपाल सिंह के पास जाएं। कृपाल सिंह पहले बंदूक को पूरा खोल देते हैं फिर एक-एक पुर्जा करके उसे वापिस जोड़ देते हैं। एक अंग्रेज के लिए अपनी जुबान के ऊपर कंट्रोल करना बहुत मुश्किल है इन्हें बातें करना और बातें सुनना बहुत पंसद है। इसी तरह एक पंजाबी के लिए एक जगह हाथ टिकाना बहुत मुश्किल है वे अपने हाथों से कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।''

सबसे पहले हमने यह समझना है कि हम जब तक सिमरन का कोर्स पूरा न कर लें तब तक हम अपना ध्यान नहीं टिका सकते। जब हम अपना ध्यान शरीर के हिस्सों से हटा लेते हैं अपनी सुरत को आँखों के पीछे नहीं ले जाते तब तक हमारा ध्यान नहीं टिक सकता। जब तक आपका ध्यान फैला हुआ है तब तक आप कभी गुरु की पगड़ी की तरफ देखते हैं कभी गुरु के शरीर के किसी हिस्से को देखते हैं इस तरह आपका ध्यान हमेशा अशांत रहता है।

सतसंगी को सबसे पहले सिमरन की अहमियत को समझना है। जब आप लगातार सिमरन करेंगे और अपने ध्यान को दोनों आँखों के पीछे ले जाएंगे तो अपने आप ही आपका ध्यान बनने लग जाएगा। जब आप तीसरे तिल से थोड़ा सा ऊपर जाएंगे तो आप देखेंगे कि आपका गुरु आपसे पहले वहाँ मौजूद है। कई बार लोग वहाँ प्रकाश देखते हैं कई लोगों को वहाँ अंधेरा दिखता है। यह सब इंसान की अपनी बेकग्राउंड पर निर्भर करता है।

जिस तरह वीडियो बनाने वाले कभी वीडियो को पास ले जाते हैं कभी दूर ले जाते हैं इसी तरह कभी-कभी हम उस स्वरूप को

अपने पास कभी अपने से दूर देखते है। हमें अपने ध्यान को बनाने की जरूरत है। जब आपका ध्यान गुरु के स्वरूप में बदल जाता है तब आपके सारे शक खत्म हो जाते हैं।

हीर और रांझा की कहानी बहुत पुरानी है। बहुत से सन्तों ने हीर-रांझा की कहानी का जिक्र किया है। हीर, रांझा से प्यार करती थी। हीर के माता-पिता बहुत सख्त थे उन्होंने हीर को रांझा से मिलने के लिए रोका। हीर रांझा के प्यार में इतनी मस्त थी कि वह हमेशा ही रांझा के बारे में सोचती रहती। एक दिन हीर ने अपनी सहेलियों से पूछा, ''हीर कहाँ है?'' उसकी सहेलियों ने कहा, ''तुम हीर हो और तुम यहीं हो।'' हीर ने कहा, ''मैं हीर नहीं हूँ मैं तो रांझा हूँ।'' हीर, रांझा का नाम पुकारते-पुकारते रांझा के प्रेम में खुद ही रांझा का रूप बन गई।

दुनिया में प्रेम करने वालो की यह हालत है तो जरा सोचें! गुरु से प्यार करने वाले शिष्यों की क्या हालत होगी? अगर हमारे अंदर गुरु के लिए प्यार है हम सदा गुरु को याद करते हैं और हर समय उसका दिया हुआ सिमरन करते हैं तो ऐसा शिष्य भी गुरु का रूप बन जाता है। वह अपने आपको पूरी तरह भूल जाता है और वहाँ सिर्फ गुरु रह जाता है।

प्यार और ध्यान गुरु के शरीर से शुरू होता है। हमें सबसे पहले गुरु के शरीर से प्यार होता है, गुरु के शरीर का ध्यान होता है। जिस तरह बछड़ा गाय को देखते ही भागकर गाय के गले लग जाता है, उसी तरह शिष्य में गुरु के लिए प्यार और उत्साह जागता है तब उसका ध्यान पूरा होता है। हम अपने अंदर उसी तरह उत्साह और प्यार पैदा करें कि हम भी मौका मिलते ही दौड़कर गुरु के दर्शन के लिए जाएं।

महाराज सावन सिंह जी बहुत जोर देकर गुरु के स्वरूप का ध्यान करने के लिए कहा करते थे। सतसंग गुरु के ध्यान का सबसे अच्छा मौका है। आपको गुरु के माथे की तरफ देखना चाहिए। आपका ध्यान गुरु के माथे की तरफ पक जाना चाहिए। वहाँ आप हों और आपका गुरु हो। आपको गुरु के साथ बैठे हुए पाठी का भी ध्यान नहीं होना चाहिए। अगर गुरु किसी से बात भी करता है तो भी आपका ध्यान सिर्फ गुरु की तरफ ही होना चाहिए। सतसंग के बाद अगर आप किसी से बातचीत करते हैं तो गुरु के दर्शनों से भरा हुआ बर्तन खाली होना शुरू हो जाएगा। सतसंग के बाद आँखें बंद करके बैठ जाएं और गुरु के दर्शनों को आनन्द लें। स्वामी जी महाराज कहते है, ''गुरु के प्यार भरे शब्द मुझे इतने अच्छे लगते हैं जैसे माता को अपने छोटे बच्चे की बातें अच्छी लगती है।''

प्यारेयो! जब इस तरह का प्यार हमारे अंदर पैदा हो जाए तो ध्यान पक्का करना क्या मुश्किल है? ऐसे प्रेमी के लिए सिमरन करना कोई मुश्किल काम नहीं। इस दुनिया में अगर आप किसी से प्यार करते हैं तो बिना किसी मेहनत के आप उसे याद कर लेते हैं उसे अपने दिल में देखते हैं। कई बार जब हम अपने मित्रों को याद करते हैं तो हमें नींद नहीं आती। इसी तरह अगर हम अपने गुरु को याद करते हैं तो क्या हम सो पाएंगे? हजरत बाहु इस हालात को इस तरह बयान करते हैं कि यह एक रोते हुए बच्चे की तरह है वह न खुद सोता है न ही दूसरे लोगों को सोने देता है।

प्यारेयो! ध्यान के बारे में कहने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है लेकिन सबसे पहले आप अपनी जुबान से सिमरन करें। जब सिमरन पक जाता है तब आप अपने मन की जुबान से सिमरन करें जब मन की जुबान से सिमरन पक जाता है तो आत्मा की जुबान से

सिमरन शुरू हो जाता है। जब शिष्य की ऐसी हालत होती है तब गुरु और शिष्य के बीच का फर्क मिट जाता है। जिस तरह मिश्री दूध में घुल जाने से दूध का रंग नहीं बदलता जायका ही बदलता है।

प्यारेयो! वह रूप जिसे हम सुंदर और मनमोहक कहते हैं। वह दसवें द्वार में पहुँचने के बाद ही दिखाई देता है। हजरत बाहू ने दसवें द्वार पहुँची हुई आत्मा की हालत इस तरह बयान करते हैं:

एह तन मेरा चश्मां होवे, मुर्शिद वेख न रज्जां हू।
लूं लूं दे मुढ लक्ख लक्ख चश्मां, इक खोला इक कज्जां हू।
इतनयां डिठयां सबर न आवे, होर किते वल भज्जां हू।
मुर्शिद दा दीदार है बाहू, लक्ख करोड़ां हज्जा हू।

मेरी करोड़ों आँखें हो जाएं जिससे मैं अपने गुरु का स्वरूप देख सकूँ! मैं एक आँख बंद करूं तो दूसरी आँख खोल लूंगा। इस तरह मुझे अपने गुरु के दर्शन होते रहेंगे। गुरु के इतने दर्शनों के बाद भी मैं तृप्त नहीं होऊँगा। मैं फिर कोई और तरीका ढूंढ़गा जिससे मुझे गुरु के दर्शन होते रहें। मेरे लिए गुरु के दर्शन लाखों तीर्थ यात्राओं से बढ़कर हैं। बुल्लेशाह कहते हैं:

नमाज पढ़ा की तें वल्ल देखां, मैंनू काबा भुल्ल गयों ई।

फिर नमाज पढ़ने की, प्रार्थना करने की कोई जरूरत नहीं होती केवल आपको एक बार झुकना होता है और आपका काम हो जाता है। जिसकी तीर्थ यात्रा अपने प्यारे को देखकर पूरी हो जाए फिर उसे मक्का जाने की जरूरत नहीं। ऐसे इंसान के लिए उसका गुरु ही उसका तीर्थस्थान मक्का मदीना बन जाता है।

शिष्य को अगर गुरु के उस रूप की एक झलक भी मिल जाए तो फिर चाहे आप उसे दुनिया का सारा राज्य भी दे दो तो वह उसे स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि वह पहले से ही उसका हो गया है।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम में 2013 में सतसंग के कार्यक्रम

02	से	04	अगस्त
07	से	11	सितम्बर
25	से	27	अक्टूबर
22	से	24	नवम्बर
27	से	29	दिसम्बर